Dr. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college Darbhanga

Economics XII 9.A. LECTURE. 6

राष्ट्रीय आय National Income

अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय की धारणा बहुत ही महत्वपूर्ण है। किसी देश का आर्थिक विकास उसकी राष्ट्रीय आय पर निर्भर करता है, तथा आर्थिक प्रगति को मापने का सर्वोत्तम साधन भी राष्ट्रीय आय ही है। अर्थशास्त्र में वितरण Distribution के क्षेत्र में भी राष्ट्रीय आय की धारणा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वास्तव में प्रकृति के विभिन्न साधनों के सहयोग से राष्ट्रीय आय का उत्पादन होता है और राष्ट्रीय आय को पुनः इन साधनों के बीच वितरीत कर दिया जाता है। हम राष्ट्रीय आय की धारणा का अध्ययन कर यह समझ पाते हैं कि हमारे देश की राष्ट्रीय आय का उत्पादन किन साधनों से होता है।

राष्ट्रीय आय की परिभाषा अनेक अर्थशास्त्रियों ने अपने-अपने ढंग से दी है जिससे हमें राष्ट्रीय आय के बारे में जानकारी मिलती है। अर्थशास्त्रियों में कुछ अर्थशास्त्रियों की परिभाषा निम्न है।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मार्शल के अनुसार "किसी देश का श्रम तथा पूँजी वहाँ के प्राकृतिक साधनों पर क्रियाशील होकर प्रतिवर्ष भौतिक तथा अभौतिक वस्तुओं का शुद्ध समूह उत्पन्न करते हैं जिसमें सभी तरह की सेवाएँ भी शामिल रहती है, यह देश की विशुद्ध वार्षिक आय या राष्ट्रीय लाभांश है" The Labour and capital of The country acting on its natural resources produce annually a certain aggregate of commodities - material and immaterial including service of all kinds. This is the true annual income or revenue of The country or national dividend.

इस प्रकार राष्ट्रीय की परिभाषा के अन्तर्गत मार्शल द्वारा वस्तुओं तथा सेवाओं के कुल उत्पादन को रखते हैं जो श्रम पूँजी तथा प्राकृतिक साधनों के सहयोग से देश में एक वर्ष के अन्तर्गत उत्पन्न किया जाता है। लेकिन राष्ट्रीय आय के अन्तर्गत कुल उत्पादन को नहीं बल्कि विशुद्ध उत्पादन को रखा जाता है। यदि देश की पूँजी का निवेश दूसरे देशों में किया जाता है तो उससे प्राप्त आय को भी राष्ट्रीय आय में जोड़ा जाता है। मार्शल द्वारा दी गयी परिभाषा को अन्य अर्थशास्त्रियों द्वारा सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से ठीक माना जाता है लेकिन व्यवहारिक दृष्टिकोण से दोषपूर्ण माना जाता है। इसलिए मार्शल के परिभाषा की आलोचनाएँ निम्नलिखित हैं-

1. किसी देश के अन्तर्गत एक वर्ष के अन्दर विभिन्न किस्म की तथा असंख्य वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन होता है, उनकी मात्रा का ठीक-ठीक अनुमान लगाना तथा गणना करना अत्यन्त कठिन है। P.T.O

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय आय की परिभाषा प्रो० पीगू ने दी है पीगू के अनुसार "राष्ट्रीय लाभांश किसी समाज की वस्तुनिष्ठ आय का वह भाग है जिसमें विदेशों से प्राप्त आय भी शामिल रहती है जिसकी मुद्रा के रूप में माप की सकती है"
इस परिभाषा में पीगू ने राष्ट्रीय आय के अन्तर्गत उन्हीं वस्तुओं तथा सेवाओं को शामिल किया जिन्हे मुद्रा के मूल्य में मापा जा सकता है। लेकिन ऐसी वस्तुएँ जिनकी मुद्रा के रूप में माप संभव नहीं है उसको परिभाषा के अनुसार राष्ट्रीय आय में नहीं रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि एक व्यक्ति नौकरानी को रखता है तथा उसे वेतन देता है तो जो राशी वेतन के रूप में दी जाती है उसे राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाएगा। यदि वह व्यक्ति नौकरानी से विवाह कर ले तो नौकरानी की सेवा की गणना राष्ट्रीय आय में नहीं होगी। क्योंकि उसे अब मुद्रा की प्राप्ति नहीं हो रही है।

इस प्रकार पीगू की परिभाषा की आलोचना अर्थशास्त्रियों द्वारा की गयी जो निम्नलिखित हो

1. पीगू का विचार बहुत ही संकीर्ण तथा विरोधाभाष से भरा है उन्होंने नौकरानी की वेतन और मुद्रा की चर्चा कर के यह बताने का प्रयास किया है कि जब नौकरानी काम करती है तो वह वेतन लेती है वह राष्ट्रीय आय का हिस्सा हो लेकिन जब विवाह कर लेती है तब उसे वेतन नहीं मिलता है उसकी मुद्रा प्राप्त नहीं होता है तब उसकी आय की गणना राष्ट्रीय आय में नहीं होगी। इस विचार में विरोधाभाष है क्योंकि नौकरानी की सेवा समान है।
2. पीगू की परिभाषा में वस्तुओं का कृत्रिम विभाजन किया गया है वैसी वस्तुएँ जिनका मुद्रा में विनिमय हो सकता है तथा वैसी जिनका विनिमय मुद्रा में नहीं होता। वस्तुत, वस्तुओं के बीच इस तरह का विभाजन सही नहीं है।
3. पीगू की परिभाषा का तीसरा दोष यह है इसे सभी तरह के अर्थव्यवस्थाओं में लागु नहीं किया जा सकता है। जहाँ वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलीत है वहाँ उनकी परिभाषा द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना कठिन होगी।

इस तरह पीगू की परिभाषा आलोचनाओं से वंचित नहीं हो

अर्थशास्त्री फिसर Fisher ने राष्ट्रीय आय की परिभाषा दी हो फिसर के अनुसार "वास्तविक राष्ट्रीय आय वार्षिक शुद्ध उत्पादन का वह भाग है जिनका उस वर्ष के अन्तर्गत प्रत्यक्ष रूप से उपभोग किया जाता हो"

P.T.O

फिशर ने अपनी परिभाषा में सेवी वस्तु के शुद्ध समूह को राष्ट्रीय आय माना है। वर्ष में जिनका प्रयोग किया जाता है, पूर्व में मार्शल द्वारा दी गयी परिभाषा में वार्षिक शुद्ध उत्पादन को राष्ट्रीय आय की संज्ञा दी है यदि इन दोनों परिभाषाओं के आधार पर राष्ट्रीय आय की गणना करें तो काफी अंतर हो जाएगा। एक उदाहरण द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है माना कि 2000 सन् में 10 हजार रुपये में एक स्कूटर निर्मित किया जाता है तो मार्शल के अनुसार पूरे 10 हजार रुपये को राष्ट्रीय आय में सम्मिलित किया जाएगा। लेकिन फिशर के अनुसार उस वर्ष की राष्ट्रीय आय में केवल उसके उपभोग मूल्य को शामिल किया जाएगा। यदि स्कूटर का जीवन 10 वर्ष मान लें तो फिशर के अनुसार केवल 1000 हजार रुपये को उस वर्ष की राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाएगा।

अर्थशास्त्री फिशर की परिभाषा व्यवहारिक दृष्टिकोण से त्रुटिपूर्ण है इससे इनकी आलोचना की जाती है फिशर की परिभाषा की आलोचना निम्नलिखित है

1. निश्चित समय में समाज कुल उपभोग की मात्रा को ज्ञात करना कठिन है।
2. टिकाऊ वस्तुओं के बारे में यह पता लगाना कठिन है कि वे कितने दिनों या वर्षों तक टिकेंगी।

इस तरह तीनों अर्थशास्त्रियों की परिभाषाओं के अपने गुण-दोष हैं यदि हम इन सभी परिभाषाओं की तुलना करें तो जीवन स्तर या कल्याण को मापने की दृष्टि से फिशर की परिभाषा श्रेष्ठ है। इसके द्वारा युद्ध के समय कितनी सामग्री मिल सकती है या लोगों की निरपेक्ष कल्याण समता का पता लगाया जा सकता है। लेकिन यदि शांति काल में लोगों के आर्थिक कल्याण को जानना है तो पीगू तथा मार्शल की परिभाषा को अच्छा माना जाता है इसमें भी मार्शल की परिभाषा सबसे अधिक वैज्ञानिक तथा व्यापक है।

इस प्रकार राष्ट्रीय आय की परिभाषा की धारणा अनेक विद्वानों द्वारा दी गयी है जिससे राष्ट्रीय आय के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है।

Scanned by CamScanner